

काश्मीर शैव दर्शन में शिव और शक्ति

डा० शिव राम यादव*

आध्यात्मिक चिन्तन की परम्परा में शैवागमों का विशिष्ट योगदान रहा है। शैवागम वेद की भाँति अपौरुषेय है। यह भगवान् शिव के मुख से निकली हुई वाणी है। यहाँ देवी भैरवी लोक कल्याण के लिए प्रश्नकर्तृ के रूप में अवतरित होकर प्रश्न करती है और भगवान् भैरव उन प्रश्नों का समाधान करते हैं। यह आगम द्वैत, द्वैताद्वैत, अद्वैत के भेद से तीन भागों में विभक्त है। काश्मीर शैव दर्शन अगेदवादी है, अतः यह अद्वैतवादी शैवागमों पर आधारित है। इस दर्शन की मान्यता है कि शिव ही एक मात्र सत् तत्त्व है। शिव से भिन्न और किसी की भी वास्तविक सत्ता नहीं है। शिव परम चैतन्य और स्वातंत्र्य स्वरूप है। सर्वव्यापकता, नित्यता, निराकारता, स्वच्छन्दता इसकी विशेषताएँ हैं। शिव प्रमाता भी है और प्रमेय भी है, यही अनुभवकर्ता एवं अनुभूत पदार्थ भी है। शिव ही कार्य और कारण दोनों है। शिव से ही यह संसार उत्पन्न होता है, वही इसका पालन करता है और अन्त में उसी में यह सम्पूर्ण जगत् विलीन हो जाता है। आगम शास्त्र में शिव के दो रूपों का गुणगान किया गया है। (1) सकल रूप (2) निष्कल रूप।

प्रत्यक्ष रूप से दृश्यमान यह जगत् भगवान् शिव का सकल स्वरूप है। इस संसार में जो भी जड़, जीव रूपी नदी, पहाड़, पेड़ पौधे आदि दृष्टिगोचर हो रहे हैं, वे सब भगवान् शिव के 'सकल' स्वरूप हैं। परमतत्त्व का यह स्वरूप इन्द्रजाल के समान माया द्वारा निर्मित है, और स्वप्न में देखी गयी वस्तु के समान असत् है। जिस प्रकार स्वप्न में देखी गयी वस्तु का अस्तित्व केवल स्वप्न तक ही सीमित रहता है, निद्रागमन होने पर वह केवल कल्पना मात्र ही रह जाती है, उसी प्रकार भगवान् शिव के सकल स्वरूप का अस्तित्व तभी तक है, जब तक स्वात्म स्वरूप की पहचान नहीं हो जाती है। स्वात्म स्वरूप की पहचान होते ही जीव में अनेक बोध जागृत हो जाता है और वह अपने पराये के व्यवहार से मुक्त होकर 'अहं' भाव का अनुभव करने लगता है।

निष्कल स्वरूप भगवान् 'शिव' का वास्तविक स्वरूप है। अपने इसी स्वरूप में भगवान् शिव सम्पूर्ण जगत् के कर्ताधर्ता एवं संहारक हैं। यही 'शिव' का सर्वव्यापी एवं विभु स्वरूप है। इस रूप में भगवान् शिव देश, कालादि सीमाओं से परे हैं। इनको किसी विशेषण के द्वारा बताया नहीं जा सकता है। क्योंकि यह मध्यमा और वैखरी वाणी का विषय नहीं है। देश, काल आदि से अपरिच्छिन्न होने के कारण इस अवस्था को वाणी के द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता है। इसका अनुभव तो केवल पूर्ण प्रज्ञा योगी को उसके अन्तःकरण में स्वयं प्रकाशित होता है। भगवान् शिव का यही स्वरूप वास्तविक तथा निर्विकल्पक है। बोध भैरव अपने इसी स्वरूप में 'अहंकार' होकर सम्पूर्ण जगत् में व्याप्त है। वस्तुतः भगवान् शिव का यही स्वरूप समस्त सांसारिक दोषों से रहित है। शक्ति रागुदाय को यन्त्र के रूप में चलाने वाला 'अहं' तत्व ही शुद्ध देव है। यही शक्ति महाचक्र में नायक के समान है। अतः आत्मस्वरूप में विश्रान्ति शिवत्व की प्राप्ति है। क्योंकि इस संसार में जो कुछ भी दिखाई दे रहा है, वह सब दर्पण में 'विम्ब' की भाँति शिव में ही प्रकाशित होता है। अर्थात् पूर्ण 'अहं' रूप आत्मा से ही यहाँ सारा विश्व फैला हुआ है। 'मैं' ही विश्व रूप हूँ। इस प्रकार का अहं ही पूर्ण चैतन्य का विमर्श है, जो नाना देहादि में प्रमाता बनकर विश्व रूप हो जाता है। कहा भी गया है—

ईशावास्यमिदं सर्वं यत् किञ्च जगत्यां जगत् ।*

इस स्वरूप में भगवान् शिव हाथ, पैर रहित होने पर भी गतिमान है और ग्रहण करते हैं। आँख कान से रहित होने पर भी वह सब कुछ देखते और सुनते हैं। वे विषयों को जानने वाले हैं, किन्तु उनको जानने वाला

* बरिष्ठ प्रवक्ता—संस्कृत डी. आर. पी. जी. कालेज सेवरा, फौजाबाद

कोई नहीं है। अतः उस परम पुरुष को प्रथम और महान कहा गया है।¹

शक्ति की उपासना अनादिकाल से विभिन्न रूपों में होती रही है। ऋग्वेद में इसको शरीर धारिणी के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो पृथ्वी को धारण करती है और स्वर्ग में निवास करती है। जिसके द्वारा विश्व का धारण होता है। यह भक्तों (सुब्रतानाग) की पूज्यमाता कही गयी हैं। अतः इसका सम्बन्ध वैष्णवगत गया।

शैव तन्त्रों में इसे शिव की अर्धांगिनी के रूप में स्वीकार किया गया है। पुराणों में यह चण्डी के रूप होती है।² शाक्त तन्त्र के अनुसार क्रियाशील शरीरधारी तत्त्व 'शक्ति' के अन्दर ही सब जीवात्माएं समाविष्ट होती हैं।³ काश्मीर शैव दर्शन में अनेक शक्तियों का नामोल्लेख किया गया है। जिसमें चामा, ज्येष्ठा, शान्ता (आम्र काश्मीर शैव दर्शन में अनेक शक्तियों का नामोल्लेख किया गया है। जिसमें चामा, ज्येष्ठा, शान्ता (आम्र चिदशक्ति, आनन्द शक्ति, इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति और क्रिया शक्ति इनके अतिरिक्त खेचरी, गोधरी, दिग्दर्शक वामेश्वरी, परा, परापरा और अपरा आदि हैं। किन्तु भगवान् शिव की मुख्यतः तीन शक्तियाँ हैं। परा, परापरा और इनमें से परापरा और अपरा शक्ति भगवान् शिव के सकल स्वरूप की शक्तियाँ हैं।⁴ आगम ग्रन्थों में 'शिव' के जिस स्वरूप का गुणगान किया गया है उस स्वरूप में 'परा' शक्ति की स्थिति है। यह अन्य शक्तियों से विलक्षण होने के कारण परा कही जाती है। इसी स्वरूप में भगवान् भैरव चिदानन्द घन स्वरूप हैं।

आगमशास्त्र के अनुसार भगवान् शिव और उनकी शक्ति में अग्रेद सम्बन्ध है। अतः यहाँ प्रश्न उठता है स्थिति में भैरव-भैरवी हो जायेगा और भैरवी-भैरव। इस आपत्ति को भगवान् भैरव स्वीकार करते हैं, और कह यही सही है कि भैरव की पराशक्ति ही भगवान् भैरव का वास्तविक स्वरूप है। शक्ति सामर्थ्य का दूसरा नाम है। और सामर्थ्यवान में अग्रेद सम्बन्ध होता है। शक्ति को शक्तिमान से अलग नहीं किया जा सकता है। शक्ति शक्तिमान की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। अतः भगवान् भैरव से सम्बन्ध, सर्वकर्तृता, सर्वज्ञता, सर्वात्मता धर्मों से युक्त यह शक्ति चिदानन्द घन स्वरूप परमात्मा शिव से अभिन्न होने के कारण ही 'परा' कही जाती

काश्मीर शैव दर्शन में शिव और शक्ति की अभिन्नता सिद्ध करने के लिए आग और उसकी दाहक श उदाहरण दिया जाता है— जिस प्रकार आग से उसकी दाहक शक्ति को अलग नहीं किया जा सकता क्योंकि वे के बिना आग राख हो जाती है। उसी प्रकार शिव से शक्ति को अलग कर देने पर शिव शिव के समान हो जा

'न शिवः शक्ति रहितो न शक्ति शिव वर्जिता।'

अतः यह कहा जा सकता है कि जिस प्रकार दाहक शक्ति के द्वारा आग के स्वरूप का ज्ञान होता है, उसी प्रकार शक्ति के द्वारा शिव का वास्तविक स्वरूप ज्ञात होता है।⁵ जब साधक पराशक्ति में प्रवेश पा जाता है तो वह शि हो जाता है— शिव और शक्ति की भेद दृष्टि समाप्त हो जाती है। विज्ञान भैरव के अनुसार पराशक्ति भगवान् शिव स्वरूप में प्रवेश पाने का मुख्य द्वार है—

'तदासौ शिव रूपी स्यात् शैवी मुखमिहोच्यते।'

जिस प्रकार मुख देखकर किसी व्यक्ति को पहचाना जाता है, उसी प्रकार 'परा' शक्ति के ज्ञान से शिव स्वरूप का ज्ञान हो जाता है। इसके अतिरिक्त शिव के नाम धागादि की कल्पना व्यर्थ है—

'शक्त्या बिना शिवे सूक्ष्मे नाम धाम न विद्यते।'

अतः स्पष्ट है कि काश्मीर की शैव परम्परा में भगवान् शिव और उनकी 'परा' शक्ति को एक दूसरे से संपृक्त माना गया है। महाकवि कालिदास ने भी शब्द और अर्थ की भाँति शिव और शक्ति को संपृक्त कहा है

यद्यपि काश्मीर शैव दर्शन में जगत् की सृष्टि 36 तत्त्वात्मक है। किन्तु इन तत्त्वों की उत्पत्ति शिव व इच्छा स्वातंत्र्य का लीला विलास है। यह दृश्यमान जगत् उनकी माया शक्ति के द्वारा उत्पन्न होता है।

¹ विज्ञान भैरव-14 ² विज्ञान भैरव-15, ³ परमार्थसार-48, ⁴ विज्ञान भैरव 102, ⁵ ईशावास्योपनिषद्-1, ⁶ श्वेताश्वतार उपनिषद्-3/19

⁷ भारतीय दर्शन भाग दो पृष्ठ, ⁸ विज्ञान भैरव-5, ⁹ विज्ञान भैरव-10, ¹⁰ परमार्थ सार की भूमिका पृष्ठ 10

माया और उनके पंच कुचकों के द्वारा आच्छादित हो जाता है, तो वह शरीरादी जीव के रूप में भासित होने लगता है। इस अवस्था में वह अपने स्वच्छन्द, आनन्दमय स्वरूप को भूलकर शरीरादि से तादात्म्य स्थापित कर लेता है, और उसे अपने पराये का भेद बोधात्मक ज्ञान हो जाता है। और वह द्वैतभाव से ग्रसित हो जाता है। इस स्थिति में परम शिव मलाच्छादित होकर शुद्ध-बुद्ध चैतन्य स्वरूप को भूल जाता है। वह अपने को उस सत्ता से भिन्न समझने लगता है। किन्तु गुरु उपदेश, शारङ्गाभ्यास, कठिन साधना, ईश्वर शक्तिपात आदि के बल से जब जीव को पुनः प्रात्याभिज्ञान उत्पन्न हो जाता है, तब पुनः शिव से अगेद बोध जागृत हो जाता है। इस स्थिति में मल रहित दर्पण की भाँति शिव में सम्पूर्ण जगत् अवभासित होने लगता है।

आदर्श मल रहिते यद्वद् बदनं विभाति तद्वदयम्।

शिव शक्तिपात विमलेधी तत्त्वे भाति भाव रूपः॥¹²

इरा प्रकार स्पष्ट है कि कश्मीर शैव दर्शन में शिव और शक्ति को अग्नि गाना गया है। 'शिव' को हजारों शक्तियों के एक संघट्ट के रूप में माना जाता है। भगवान् शिव स्वयं अपनी इच्छा स्वातंत्र्य से शिव और पार्वती के रूप अवभासित होते हैं—

गुरु शिष्य पदे स्थित्वा स्वयं देवः परमधिवः।

प्रश्नोत्तर पदैर्वाक्यैः तन्त्रं समवतार

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

- | | | |
|------------------------------|---|--------------------------|
| 1. स्पन्द कारिका | — | प्रो० नीलकण्ठ गुरुदू |
| 2. विज्ञान भैरव | — | प्रो० वज्रवल्लभ द्विवेदी |
| 3. भारतीय दर्शन | — | डॉ० राधा कृष्णन |
| 4. भारतीय दर्शन का सर्वेक्षण | — | डॉ० संगमलाल पाण्डेय |
| 5. ईशावास्योपनिषद् | — | डॉ० राजदेव मिश्र |
| 6. श्वेताश्वतर उपनिषद् | — | |
| 7. परमार्थसार | — | डॉ० कमला द्विवेदी |

¹²विज्ञान भैरव— 19, ¹³विज्ञान भैरव— 20, ¹⁴नित्य शोडशिकर्णव— 4/7